Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN(o): 2581-6241
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 7.384
Volume - 8, Issue - 4, April - 2025

DOIs:10.2018/SS/202504010 --:-- Research Paper / Article / Review

"सँभल भी न पाओगेः सूरजपाल चौहान की कविताओं का अध्ययन"

डॉ. सरला देवी
असिस्टेंट प्रोफेसर (हिंदी), राजकीय महाविद्यालय दूबलधन (झज्जर)
Email ID – sarla.mdu@gmail.com

शोध-सारांश सूरजपाल चौहान एक उत्कृष्ट हिंदी कवि हैं, जिनकी कविताएं भावनाओं और समाज की अवस्था को गहराई से छूती हैं। उनका काव्य विविधता और गहराई की दृष्टि से प्रसिद्ध है। उनकी कविताएं विविध विषयों पर आधारित होती हैं, जैसे कि प्रेम, प्रेरणा, सामाजिक मुद्दे, और मानवीय अनुभव। सूरजपाल चौहान के रचनात्मक साहित्य का मुख्य लक्ष्य समाज की समस्याओं का सामाजिक संदेश देना है। उनके काव्य में भावनाओं की सांगीतिक उत्कृष्टता, उम्दा अलंकारिक उपयोग, और विचारशीलता का विशेष महत्व है। उनकी कविताओं में साहस, स्वतंत्रता, और समाज के प्रति जागरूकता के संदेश उपस्थित होते हैं।

मुख्य-शब्दः समाज, जागरूकता, दलित, साहित्य, शोषण, शिक्षा, संवेदनशीलता, धर्म, अंधश्रद्धा, संस्कृति, अपमान, अत्याचार, जातिवाद ।

सूरजपाल चौहान एक उत्कृष्ट हिंदी कवि और लेखक हैं, जिनका जन्म उत्तर प्रदेश के मेरठ जिले में हुआ था। उन्होंने अपने जीवन को साहित्यिक यात्रा में समर्पित किया है और अपनी विशेष शैली में कविता, कहानी, और निबंधों की रचनाएं की हैं। चौहान की कविताएं विभिन्न सामाजिक मुद्दों, और व्यक्तिगत अनुभवों को व्यक्त करती हैं।

उनकी रचनाएं गहराई से भरी होती हैं और अक्सर सामाजिक और राजनीतिक विवादों पर ध्यान केंदित करती हैं। उनकी भाषा सरल और प्रभावशाली होती है, जिससे पाठकों का ध्यान आकर्षित होता है। चौहान के लेखन में भावनात्मक प्रतिस्पर्धा और साहित्यिक दृष्टिकोण का प्रभाव महसूस होता है।

चौहान के लेखन का एक विशेष गुण यह है कि वे सामाजिक संदेश को काव्यात्मक रूप से प्रस्तुत करते हैं, जो पाठकों के दिलों तक छू जाता है। उनकी रचनाएं भारतीय साहित्य के माध्यम से समाज में परिवर्तन और संवेदनशीलता को बढ़ावा देती हैं।

सूरजपाल चौहान की साहित्यिक यात्रा उनके अनगिनत काव्य, कहानी, और निबंधों के माध्यम से उनके पाठकों को साहित्य की गहराई में ले जाती है और उन्हें समाज की सच्चाई से जोड़ती है।

सूरजपाल चौहान का काव्य संग्रह "सँभल भी न पाओगे" उनके प्रसिद्ध रचनात्मक कार्यों में से एक है, जो समाज के विभिन्न पहलुओं को व्यापक दृष्टिकोण से दर्शाता है। चौहान की कविताओं में गहरी भावनाएं, आलंबन, और संवेदनशीलता का अनुभव किया जा सकता है, जो पाठकों को उनके संदेश में समाहित करते हैं।

'सँभल भी न पाओगे' एक उत्कृष्ट काव्य संग्रह है जो सूरजपाल चौहान की साहित्यिक उपलब्धियों में से एक है। इस संग्रह में संग्रहीत कविताएं जीवन के विभिन्न पहलुओं, सामाजिक मुद्दों, और व्यक्तिगत अनुभवों को सार्थकता और गहराई से व्यक्त करती हैं। चौहान के काव्य में व्यापक विचारधारा, विचारशीलता, और भावनात्मक प्रतिस्पर्धा का महत्वपूर्ण स्थान है। काव्य में उनकी भाषा प्रभावशाली होती है, जिसमें सरलता और गहराई का एक उत्कृष्ट संयोजन होता है। वे आधुनिक जीवन की समस्याओं और समाज की विपरीत प्रवृत्तियों को उजागर करते हैं। 'संभल भी न पाओगे एक सोचने को मजबूर करने वाली रचना है जो पाठकों को जीवन की महत्ता पर गंभीरता से विचार करने पर आमंत्रित करती है। चौहान के काव्य संग्रह में भारतीय समाज की विविधता, संघर्ष, और आत्मविश्वास का अद्भुत चित्र प्रस्तुत किया गया

है। उनकी कविताओं में शब्दों की शक्ति और भावनात्मक गहराई के साथ-साथ साहित्यिक दृष्टिकोण और चिंतन की गहराई महसूस होती है। इस संग्रह में संकलित कविताओं का अध्ययन महत्वपूर्ण बिंदुओं के आधार पर करेंगे-

1. ग्रामीण संस्कृति का झलकः

सूरजपाल चौहान ने ग्रामीण संस्कृति का विविधता से चित्रण किया है। उन्होंने गाँव के जीवन, किसानों की मेहनत, प्राकृतिक सुंदरता, और ग्रामीण समाज की सांस्कृतिक रूपरेखा को विवरणशीलता से प्रस्तुत किया है। उनकी कविताओं में गाँव के लोगों के जीवन की वास्तविकता, उनकी संघर्ष, और उनकी अनुभूतियों को उन्होंने सुंदरता से प्रस्तुत किया है। 'याद आता है अपना गांव' और 'मेरा गांव' कविताएं जो उनके दूसरे काव्य संग्रह में संकलित है, उनमें कवि ने गांव के परिवेश की अच्छी छवि प्रस्तुत की है, वहीं दूसरी ओर इस काव्य संग्रह में कवि ने लुप्त होती ग्रामीण संस्कृति की चिंता को व्यक्त किया है। शहरी सभ्यता की चकाचौंध में आज मानव इतना खो गया है कि ग्रामीण जीवन से जुड़े हुए रीति-रिवाज, पहनावा और वाद्ययंत्रों को भूलता ही जा रहा है। 'बीन की धुन को तरसे कान' कविता में इसी चिंता को व्यक्त करते हुए लिखते हैं-

"न मृदंग न ढोल-नगाड़ा
न तूंबा, मंजीरा बाजा
लुप्त बांसुरी और सितार
डफ, डफली भी गये सिधार।
बीन की धुन को तरसे कान
कहां गयी अलगोझा तान
गमक-गमक ढोलक की ताल
छमक छमक पंसूरी चाल।"1

उनकी कविताओं में ग्रामीण जीवन की समृद्धि और उसके अनूठेपन को सार्थकता से चित्रित किया गया है।

2. शोषित दलितों का चित्रणः

सूरजपाल चौहान ने शोषित दलितों के जीवन का विविधता से चित्रण किया है। उन्होंने उनके संघर्ष, उनकी अपमानितता, और उनकी संघर्षशीलता को उजागर किया है। उनकी कविताओं में दलितों की समस्याओं और उनके अधिकारों की अवहेलना को उन्होंने दर्शाया है। चौहान ने उनके जीवन की वास्तविकता, उनकी अंतःकरण की भावनाओं को महसूस कराने के लिए अपनी कविताओं में उनके अनुभवों को साझा किया है। 'दलित होने की पीड़ा' कविता में कवि ने बताया है कि एक ब्राह्मण जो गरीब है, लेकिन समाज में वह सम्मानित है इसलिए वह अपनी गरीबी से कभी भी मुक्ति पा सकता है लेकिन एक दलित गरीब तो है ही और वह हमेशा समाज में अपमानित है। उनकी इस स्थिति का वर्णन करते हुए कवि लिखते हैं-

"लेकिन
एक दलित हमेशा समाज में अपमानित है वह सदा
बना रहता है दलित ही।
उसे –
सहनी पड़ती है
जीवन-भर
जाति-दंश की मार
और
लड़ना पड़ता है
उम-भर
जातिवाद व छुआछूत के भूत से" 2

कवि ने दलित, शोषितों की समाज में जगह बनाने के लिए उनके सामाजिक और आर्थिक विकास की मांग को उठाया है।

3. स्वर्णों की संकुचित मानसिकताः

सूरजपाल चौहान ने स्वर्णों की संकुचित मानसिकता को चित्रित किया है। उन्होंने उनकी संकुचितता, उनकी अभिमानी और अहंकारी दृष्टि को व्यक्त किया है। स्वर्णों का धर्म, धन, और सामाजिक स्थिति पर उनका अधिकारी दृष्टिकोण प्रकट होता है। चौहान ने उनकी अधिकारी और संकुचित मानसिकता के पीछे के कारणों पर भी विचार किया है, जैसे कि सामाजिक दबाव, सांप्रदायिकता, धार्मिकता और अन्य। उनके काव्य में स्वर्णों की संकुचित मानसिकता के प्रति उनकी समझ और विचारधारा को स्पष्टतः दिखाया गया है। 'वह कौन है?' कविता में कवि लिखते हैं-

"जिसके
मन भीतर कपट है,
झूठ है
पाखंड के संग-संग लूट है
दिखलाकर भय
स्वर्ग-नर्क का
पिलाता है –
पाप-पुण्य का घोल
बताओ वह कौन है?"3

कवि ने स्वर्णों के दलितों पर होने वाले अत्याचार, संस्कृति के नाम पर हिंदू-मुस्लिम में भेदभाव और धर्म के नाम पर सती प्रथा के रूप में नारी पर अत्याचारों का विवरण बेबाकी से दिया है। जैसे –

"तुमने –
गुजरात के दंगों में
मुसलमान के घरों को
चुन-चुनकर जला डाला।
पति के मर जाने पर
जला डालते हो
उसे –
सती-प्रथा के नाम पर।"4

स्वर्णों की संकुचित और जातिवादी मानसिकता के कारण दलितों और शोषितों के अधिकारों का हनन के विविध पहलुओं को कवि ने यहां उजागर किया है। चौहान ने उनकी सामाजिक, आर्थिक, और राजनीतिक असमानता को उजागर किया है और असमानता के खिलाफ आवाज उठाने की आवश्यकता को उजागर किया है।

4. डॉ. अम्बेडकर के विचारों का प्रभावः

सूरजपाल चौहान के काव्य पर डॉ. भीमराव अम्बेडकर के विचारों का प्रभाव प्रत्यक्ष रूप से देखा जा सकता है। अम्बेडकर ने अपने जीवन के दौरान दलितों के अधिकारों के लिए संघर्ष किया और उन्हें समाज में समानता की दिशा में आगे बढ़ाने की अपील की। उनके विचारों का प्रभाव कवि सूरजपाल चौहान की कविताओं में भी प्रत्यक्ष रूप से दिखाई देता है, जैसे कि दलितों के अधिकारों की सुरक्षा, समाज में उनकी स्थिति को सुधारने की आवश्यकता, और सामाजिक असमानता के खिलाफ उनकी लड़ाई को मजबूत करने की आवश्यकता। कवि सूरजपाल चौहान दलितों-पिछड़ों के मुक्तिदाता एवं प्रेरणा स्रोत केवल बाबा साहेब अंबेडकर और उनके द्वारा रचित साहित्य को ही मानते हैं। इस संदर्भ में वे लिखते हैं-

"यदि कोई
दलितों का मुक्तिदाता
आदर्श
या प्रेरणास्रोत है
तो-
वह है

केवल
और केवल बाबा साहेब अंबेडकर
व उनके द्वारा
रचित साहित्य।" 5

चौहान ने अम्बेडकर के विचारों को काव्य के माध्यम से अपनी कविताओं में समाहित किया है, जिससे सामाजिक न्याय और समानता के प्रति उनकी प्रेरणा को व्यक्त किया गया है। डॉ. अंबेडकर के विचारों से प्रभावित होकर ही कवि लोगों को भीम के वीर सिपाही कहकर उनके अंदर परिवर्तन करने का जोश भरते हुए कहते हैं-

"ओ भीम के वीर सिपाही
क्यों रहता है डर के अपनी शौर्यगाथा की पुस्तक देख कभी उलट के।
ओ भीम के वीर सिपाही
क्यों रहता है डर के।।"6

5. राष्ट्रीय भावनाः

सूरजपाल चौहान ने राष्ट्रीय भावना को व्यापक रूप से व्यक्त किया है। उनकी कविताओं में देशभक्ति, स्वतंत्रता के प्रति अगाध प्रेम, और राष्ट्रीय संघर्ष की ऊर्जा को उन्होंने सुनिश्चित किया है। चौहान ने अपनी कविताओं में देश के विभिन्न पहलुओं, विरासत की महत्ता, और राष्ट्रीय एकता को स्पष्ट किया है। उनके काव्य में राष्ट्रीय भावना का प्रत्यक्ष और अद्भुत वर्णन है, जो उनकी कविताओं को एक राष्ट्रीय समर्थन और गर्व के साथ भर देता है। 'तुम्हारी भृकुटी तन गई कविता में कवि कहते हैं कि माना कि मैं एक दलित हूं, लेकिन जितना यह देश तुम्हारा है उतना मेरा भी है। कवि के हृदय में समाहित राष्ट्रीय भावों को उजागर करती हुई पंक्तियां इस प्रकार हैं-

"जितना-
यह देश तुम्हारा है
उतना मेरा भी है,
मैं भी-
नागरिक हूं इस देश का।"7

चौहान के काव्य में राष्ट्रीय भावना का प्रकटीकरण उनके अपने राष्ट्रीय भावों और देशभक्ति के आदर्शों के माध्यम से होता है। भारत एक धर्मनिरपेक्ष देश है, लेकिन राजनीति में धर्म के बढ़ते प्रभाव पर कवि को चिंता है। ऐसी स्थिति देश के हित में नहीं है। इस पर चिंता व्यक्त करते हुए कवि लिखते हैं-

"तुमने बना दिया
संसद को मन्दिर
अब वहां-
देश-हित की चर्चाएं नहीं
रची जाती हैं
तरह-तरह की साजिशें
दलितों
और
अल्पसंख्यकों के विरुद्ध
जैसे-
सदियों से
रची जाती रही हैं मंदिरों में।"8

6. जातीय वैमनस्यः

सूरजपाल चौहान के काव्य संग्रह 'सँभल भी न पाओगे में जातीय वैमनस्य का विवरण प्रस्तुत किया गया है। उन्होंने उन जातीय बंधनों और भेदभावों को उजागर किया है जो समाज में निर्धारित होते हैं। उनकी कविताओं में जातीय भेदभाव,

जातिगत उत्पीड़न, और जातिवाद के खिलाफ उनकी आवाज को सुनाया गया है। चौहान ने समाज में जातिगत भेदभाव के प्रति अपने आक्रामक और समर्थक विचारों को बयान किया है, और उन्होंने इसे उन्नति और समानता की ओर बढ़ाने के लिए एक महत्वपूर्ण मुद्दा बनाया है। उनके काव्य से उजागर होने वाले जातीय वैमनस्य के मुद्दे सामाजिक चेतना को जागरूक करते हैं और उसे संवेदनशीलता की दिशा में अग्रसर करते हैं। कवि लिखते हैं-

"कभी भी समाप्त नहीं होगा इस देश से जातिवाद एवं पाखंडवाद ।
यहां मनुष्य की पहचान
उसके-
गुण-दोष से नहीं होती है जाति से।"9

चौहान ने जातिगत भेदभाव के खिलाफ लड़ाई में जुटे लोगों के संघर्ष को भी उजागर किया है और उन्हें समर्थन किया है। उन्होंने उन लोगों की आवाज को सुनाया है जो जातीय वैमनस्यता के खिलाफ खुलकर बोलते हैं और इसे उजागर करने की कोशिश करते हैं। इसके माध्यम से, चौहान ने जातीय वैमनस्यता को उजागर करके समाज में बदलाव लाने के लिए एक महत्वपूर्ण संदेश दिया है। 'मेरे हिस्से का गांव' कविता में कवि जातिगत पीड़ा का उल्लेख करते हुए लिखते हैं-

"मेरे हिस्से न खेत हैं
और न खलिहान
मेरे-
हिस्से के गांव में
जाति का ओछापन
और क़दम-कदम पर
जाति-दंश की मार है। "10

7. समाज में बढ़ता अंधविश्वास एवं पाखंडः

कवि सूरजपाल चौहान ने समाज में व्याप्त अंधविश्वास और पाखंड को विस्तार से चित्रित किया गया है। उन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से समाज में मौजूद अंधविश्वासों और पाखंड की कठोरता को उजागर किया है। वे दलित समुदाय के जीवन में घटित विभिन्न घटनाओं को अपनी कविताओं में सामाजिक विचार के माध्यम से प्रस्तुत करते हैं, जिनमें अंधविश्वास, और पाखंड की बढ़ती हुई मान्यताओं का उल्लेख किया गया है। 'कृतघ्न' कविता में कवि दलित समुदाय के बारे में लिखते हैं-

"आये दिन
मेरे घर में चलता है
अखंड-पाठ
और
नवरात्रों में बजती है ढोलक
रात-दिन
दुर्गा मैया के नाम पर।"11

इसी प्रकार कवि ऐसे ब्राह्मणों पर भी व्यंग्य करता है जो अंधविश्वास और पाखंड में डूबे हुए हैं। 'निठल्लू' कविता में कवि ऐसा ही वर्णन करते हुए लिखते हैं-

"मुफ्त का माल
खा-खाकर
चढ़ गयी है चर्बी
अंधविश्वास की
तुम्हारी आंखों पर
और
बन गए हो
संवेदनहीन/विवेकहीन।" 12

8. सामाजिक विकृतियांः

कवि सूरजपाल चौहान ने सामाजिक विकृतियों का विवरण अत्यंत प्रभावशाली तरीके से प्रस्तुत किया गया है। उनकी कविताओं में बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, धर्म का विकृत रूप, दहेज, नारी पर अत्याचार आदि समस्याओं का जिक्र किया गया है।

बेरोजगारी का विषय कवि की कई कविताओं में उठाया गया है। वे बेरोजगारी के दुःख और असहायता को बयान करते हैं और समाज को इस समस्या का सामना करने के लिए प्रेरित करते हैं। दिन रात मेहनत करने के बावजूद भी एक व्यक्ति भूखा रहने पर मजबूर है, ऐसे मजदूर की तस्वीर पेश करते हुए कवि लिखते हैं-

"रात-दिन मेहनत करें, थककर रहता चूर।
अधनंगा भूखा रहे, भारत का मजदूर ।।" 13

भ्रष्टाचार भी उनकी कविताओं का एक महत्वपूर्ण विषय है। वे भ्रष्टाचारी अधिकारियों और नेताओं की अनैतिकता को उजागर करते हैं और लोगों को उनके अधिकारों की रक्षा करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। धर्म-निरपेक्ष भारत देश में आज धर्म का रूप विकृत हो चुका है, जिसे कवि ने अपनी कविताओं में सटीकता एवं निडरता से दिखाया है। वे धार्मिक अनुष्ठानों के अंधविश्वास और तानाशाही को उजागर करते हैं और सामाजिक न्याय के लिए उत्साहित करते हैं। वे लिखते हैं-

"इनके लेखे
देश जाये भाड़ में,
जनता भूखी-प्यासी
या मरे बाढ़ में,
ये केवल
अराजकता फैलायेंगे
मन्दिर की आड़ में।" 14

दहेज और नारी पर अत्याचार भी उनकी कविताओं का अभिन्न हिस्सा है। वे महिलाओं के उत्थान और समाज में समानता के लिए लड़ते हैं और दहेज प्रथा और नारी पर अत्याचार के खिलाफ उत्साहित करते हैं। नारी का अपमान करने वालों पर व्यंग्य करते हुए वे लिखते हैं-

"नारी के अपमान संग, गप्पों की भरमार।
नख-शिख वर्णन से भरा, साहित्यिक भंडार।।"15

इसी प्रकार दहेज प्रथा जैसी सामाजिक विकृति का विरोध करते हुए और दहेज न लेकर आने पर नारी को जला डालने वाले लोगों पर अपनी वाणी से कटु प्रहार करते हुए लिखते हैं-

"जला डालते हो
दहेज न लाने पर
अपनी-
पत्नी को।"16

सम्पूर्ण रूप से, सूरजपाल चौहान के काव्य संग्रह में सामाजिक विकृतियों का विवरण गहराई से किया गया है और उन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से समाज को जागरूक करने और सुधारने के लिए प्रेरित किया है।

निष्कर्षः

उपर्युक्त विवरण के आधार पर निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि सूरजपाल चौहान के काव्य संग्रह 'सँभल भी न पाओगे' में अमानवीयता, धार्मिक अंधश्रद्धा, अन्याय एवं सामाजिक विकृतियों का ऐसा भयावह रूप प्रकट होता है, जिसने शोषितों व दलितों को पशुवत जीवन जीने के लिए मजबूर कर दिया है। उनकी कविताएं न केवल दलितों के ऐसे निरीह और मार्मिक जीवन का वर्णन करती है बल्कि उनको जागृति का संदेश भी देती है।

कवि महसूस करते हैं कि समाज से जातीय चेतना नहीं मिट पा रही है लेकिन हर जाति में बाबा साहब के विचारों का प्रचार-प्रसार करके अंधविश्वास, ढोंग और पाखंड से उन्हें निकाला जा सकता है। इसके लिए कवि चमार जाति का

उल्लेख करते हैं कि किस प्रकार चमार जाति आज बाबा साहब के विचारों का अनुसरण करते हुए जाति व्यवस्था और ब्राह्मणवाद को नकारती जा रही है। इस संदर्भ में कवि लिखते हैं-

"जब-
इस देश से
जातिवाद नहीं जा सकता
तो फिर-
क्यों न मजबूत किया जाये
अपनी-अपनी
जातियों को।
पढ़-लिखकर
क्यों न जगाया जाये विवेक
ऊंच-नीच
व अंधविश्वास से लड़ने के लिए,
मजबूती प्रदान की जाये
अपनी-अपनी जातियों में
चमार जाति की तरह।" 17

संदर्भ-सूची

1. चौहान; सूरजपाल, 'सँभल भी न पाओगे', पृष्ठ-41
2. वहीं, पृष्ठ-70-71
3. वहीं, पृष्ठ-42
4. वहीं, पृष्ठ-54
5. वहीं, पृष्ठ-107
6. वहीं, पृष्ठ-76
7. वहीं, पृष्ठ-81
8. वहीं, पृष्ठ-31
9. वहीं, पृष्ठ-92
10. वहीं, पृष्ठ-58
11. वहीं, पृष्ठ-90
12. वहीं, पृष्ठ-79
13. वहीं, पृष्ठ-30
14. वहीं, पृष्ठ-32
15. वहीं, पृष्ठ-30
16. वहीं, पृष्ठ-54
17. वहीं, पृष्ठ-93